जिंदगी का रास्ता बना बनाया नहीं मिलता जिसने जैसा रास्ता बनाया उसे वैसी ही मंजिल मिली है।
– अज्ञात

अर्थव्यवस्था एक गति पकड़ लेगी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा शुक्रवार को संसद में पेश आर्थिक सर्वेक्षण ने स्पष्ट कर दिया है कि दबाव के बावजूद हालात भयावह नहीं हैं। अभी हम जिस मुकाम पर खड़े हैं, वहां से बेहतरी की गुंजाइश बन रही है और जल्दी ही अर्थव्यवस्था एक गति पकड़ लेगी।

नवीन जोशी।

आर्थिक सर्वेक्षण 2019–20 ने भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर कई चीजें साफ की हैं और आम बजट को लेकर आशाएं भी जगाई हैं। दरअसल, पिछले कुछ समय से विभिन्न राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और कुछेक अर्थशास्त्रियों द्वारा जिस तरह की बातें की जा रही थीं उससे देश की इकॉनमी को लेकर आम आदमी के भीतर कई तरह की आशंकाएं गहराने लगी थीं। लेकिन वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा शुक्रवार को संसद में पेश आर्थिक सर्वेक्षण ने स्पष्ट कर दिया है कि दबाव के बावजूद हालात भयावह नहीं हैं। अभी हम जिस मुकाम पर खड़े हैं, वहां से बेहतरी की गुंजाइश बन रही है और जल्दी ही अर्थव्यवस्था एक गति पकड़ लेगी। सर्वे में कहा गया है आने वाले वित्त वर्ष (2020–21) में जीडीपी ग्रोथ बढ़कर 6–6.5 फीसदी पहुंच सकती है, मगर चालू वित्त वर्ष (2019–20) में ग्रोथ रेट 5 प्रतिशत रहने का ही अनुमान है। वैश्विक सुस्ती का हमारी अर्थव्यवस्था पर असर पड़ा है। फाइनेंशल सेक्टर की दिक्कतों के चलते निवेश में कमी की वजह से चालू वित्त वर्ष में ग्रोथ घटी। लेकिन, जितनी गिरावट आनी थी आ चुकी है। अगले वित्त वर्ष से ग्रोथ बढ़ने की उम्मीद है। हालांकि आर्थिक वृद्धि को तेज करने के लिए चालू वित्त वर्ष के राजकोषीय घाटा लक्ष्य में ढील देनी पड़ सकती है। सर्वे के मुताबिक वर्ष 2011–12 से 2017–18 के बीच देश के शहरी और ग्रामीण इलाकों में 2.62 करोड़ लोगों को नौकरियां मिली हैं। यह आंकड़ा संगठित क्षेत्र का है। नवंबर 2019 तक कुल 69.03 लाख लोगों को प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत प्रशिक्षित किया गया है। पिछले 6 साल के दौरान महिलाओं के रोजगार में 8 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

सर्वे में सरकार को रोजगार बढ़ाने का रास्ता सुझाया गया है। कहा गया है कि मेक इन इंडिया अभियान में 'असेंबलिंग इन इंडिया फॉर वर्ल्ड' को शामिल कर रोजगार और एक्सपोर्ट पर ध्यान देने से 2025 तक आकर्षक तनख्वाह वाली 4 करोड़ और 2030 तक 8 करोड़ नौकरियां दी जा सकती हैं। इससे 5 ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी के लक्ष्य की ओर बढ़ना भी संभव हो सकेगा। मुख्य आर्थिक सलाहकार के. सुब्रमण्यम ने कहा कि चीन कामगारों को बढ़ावा देने पर विशेष जोर देता है। भारत को भी ऐसा करने की जरूरत है। सर्वे में नया कारोबार शुरू करने, संपत्ति पंजीकरण, कर भुगतान और अनुबंधों के प्रवर्तन को सुगम करने के लिए कारगर उपायों की जरूरत भी बताई गई है। सर्वे से यह संकेत मिलता है कि इकॉनमी में मांग और उपभोग बढ़ाने के लिए बजट में पर्सनल इनकम टैक्स में छूट का प्रावधान संभव है। साथ ही इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में निवेश बढ़ाने वाली घोषणाएं भी की जा सकती हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि आज अपने बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण हर वर्ग को राहत देने की कोशिश करेंगी।

गहरे रहस्य

अशोक वोहरा।

क्या यह आपको सही लगता है? आपके सबसे गहरे, सबसे गहरे रहस्य। किसी भी तीसरे पक्ष द्वारा घुसपैठ किए जा रहे पाठ संदेश वार्तालापों में शामिल हैं।

दुर्भाग्य से, पारंपरिक संदेश सेवा आपकी निजी बातचीत को बिना किसी सोच के आसानी से समझा जा सकता है कि वह आपको कितनी बड़ी मुसीबत में डाल सकती है। तो, क्या आपको नहीं लगता कि हमें इसे बदलना चाहिए, हम क्यों नहीं हैं? उन संदेशों को सुरक्षित रखने के लिए एंड–टू–एंड एन्क्रिप्शन की पेशकश करने वाले सबसे सुरक्षित और निजी मैसेंजर को डाउनलोड करें जो इसे हैकर्स, आईएसपी और सरकारी अधिकारियों से दूर रखते हैं। वहां से, आप पहले सुरक्षित और संरक्षित डेटा वातावरण की ओर ले जा सकते हैं।

संपादकीय

खेलने का दावेदार

भारतीय क्रिकेट टीम जब भी अंडर–19 विश्व कप में खेलती है, तो उसमें दो–तीन ऐसे चमकदार सितारे आते हैं, जिन्हें भविष्य में टीम इंडिया में खेलने का दावेदार माना जाता है। भारत को इस बार सेमीफाइनल तक पहुंचाने में अहम योगदान करने वाले हैं यशस्वी जायसवाल, कार्तिक त्यागी और रवि बिश्नोई। इस तिकड़ी के दम पर ही भारत ने ऑस्ट्रेलिया की दमदार टीम को हरा कर सेमीफाइनल में स्थान बनाया है। आम तौर पर यह माना जाता है कि अंडर–19 विश्व कप खिलाड़ियों को पहचान दिलाने वाला होता है। पर यह खिलाड़ियों को टीम इंडिया में पहुंचाने वाला तो कतई नहीं है। सही में अकेले प्रतिभा के दम पर जूनियर से सीनियर वर्ग में आ पाना संभव नजर नहीं आता है। इसके लिए खिलाड़ियों का अन्य कई खूबियों से लैस होना जरूरी होता है।

मौजूदा अंडर–19 विश्व कप में भी यशस्वी जायसवाल, पेस गेंदबाज कार्तिक त्यागी और स्पिनर रवि बिश्नोई ने अपने प्रदर्शन से प्रभावित किया है। यशस्वी जायसवाल की कहानी तो इस विश्व कप से काफी पहले से सुर्खियों में रही है। वह यह विश्व कप नहीं खेलते तो भी टीम इंडिया में आने के दावेदार माने जाते। लेकिन कार्तिक त्यागी और रवि बिश्नोई दोनों ही क्षमतावान गेंदबाज हैं। पर गेंदबाजी में कितना मुश्किल संघर्ष है, इसे हम उमेश यादव जैसे खिलाड़ी को अक्सर टीम से बाहर बैठा देखकर समझ सकते हैं। अगर ये दोनों लगातार सीनियर वर्ग में अच्छा प्रदर्शन करने में सफल रहते हैं तो उनकी दावेदारी मजबूत हो सकती है। अब हम 2018 अंडर–19 विश्व कप जिताने में अहम भूमिका निभाने वाले पृथ्वी शॉ, शुभमन गिल, कमलेश नागरकोटी और शिवम मावी की बात करें तो इनमें से सिर्फ पृथ्वी शॉ ही अपनी काबिलियत को साबित कर पाए हैं।

यही कारण है कि सेवा दल की सलामी के वक्त गांधी टोपी को सर पर रखकर रस्म अदायगी करने वाले नेता चन्द क्षणों में ही इसे उतारकर मुस्कुराते हुए अपने अंगरक्षक के हवाले कर देते हैं।

गांधी के नाम को भुनाकर सत्ता

लिमटी खरे।

कांग्रेस का इतिहास गौरवमयी रहा है, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। एक दशक से कांग्रेस अपने मूल मार्ग से भटक चुकी है। आधी सदी से ज्यादा इस देश पर शासन करने वाली कांग्रेस आज गांधी के नाम को भुनाकर सत्ता सुख भोग रही है, किन्तु गांधी टोपी को पहनना कांग्रेस के हर नेता यहां तक कि कांग्रेस के युवा आईकान राहुल गांधी तक को नागवार गुजरता है। यही कारण है कि सेवा दल की सलामी के वक्त गांधी टोपी को सर पर रखकर रस्म अदायगी करने वाले नेता चन्द क्षणों में ही इसे उतारकर मुस्कुराते हुए अपने अंगरक्षक के हवाले कर देते हैं। कहते हैं नंगा सिर अच्छा नहीं माना जाता। मर्द के सर पर टोपी और औरत के सर पर पल्लू संस्कार की निशानी होती है, जो दोनों ही चीजें आज विलुप्त हो गई हैं। देश के पहले प्रधानमंत्री को बिना टोपी के बहुत ही कम देखा गया।

कहने को तो कांग्रेस द्वारा गांधी नेहरू परिवारों का गुणगान किया जाता है, किन्तु इसमें राष्ट्रपिता मोहन दास करमचंद गांधी का शुमार है या नहीं यह कहा नहीं जा सकता है। जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, के बाद अब सोनिया गांधी और राहुल गांधी के इर्द गिर्द ही

कांग्रेस की सत्ता की धुरी घूमती महसूस होती है। वैसे तो महात्मा गांधी और उनकी अपनाई गई खादी को भी अपनी विरासत मानती आई है कांग्रेस। पर अब लगता है कि वह इन दोनों ही चीजों से दूर होती चली जा रही है। अधिवेशन, चुनाव, मेले ठेलों में तो कांग्रेसी खादी के वस्त्रों का उपयोग जमकर करते हैं, किन्तु उनके सर से गांधी टोपी नदारत ही रहा करती है।

कांग्रेस सेवादल के ड्रेस कोड में शामिल है गांधी टोपी। जब भी किसी बड़े नेता या मंत्री को कांग्रेस सेवादल की सलामी लेनी होती है तो उनके लिए चंद लम्हों के लिए ही सही गांधी टोपी की व्यवस्था की जाती है। सलमी लेने के तुरंत बाद नेता टोपी उतारकर अपने अंगरक्षक की ओर बढ़ा देते हैं, और अपने बाल काढ़ते नजर आते हैं, ताकि फोटोग्राफर अगर उनका फोटो लें तो उनका चेहरा बिगड़े बालों के चलते भद्दा न लगे।

इतिहास गवाह है कि गांधी टोपी कांग्रेस विचारधारा से जुड़े लोगों के पहनावे का हिस्सा रही है। अस्सी के दशक के आरंभ तक नेताओं के सिर की शान हुआ करती थी गांधी टोपी। पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू हों या मोरारजी देसाई, किसी ने शायद ही इनकी कोई तस्वीर बिना गांधी टोपी के देखी हो। आज भी महाराष्ट्र सहित अनेक सूबों के ग्रामीण इलाकों में गांधी टोपी दैनिक पहनने वाली वेशभूषा का अभिन्न अंग है।

लगता है कि वक्त बदलने के साथ ही साथ इस विचारधारा के लोगों के पहनावे में भी अंतर आ चुका है। अस्सी के दशक के उपरांत गांधी टोपी धारण किए गए नेताओं के चित्र दुर्लभ ही देखने को मिलते हैं। करीने से काढे गए बालों और पोज देते नेता मंत्री अवश्य ही दिख जाया करते हैं। गांधी नेहरू के नाम पर सियासी मलाई चखने वाले नेताओं को गांधी टोपी पहनना वजन से कम नहीं लगता है। आधुनिकता के इस युग में महात्मा गांधी के नाम से पहचानी जाने वाली गांधी टोपी अब नेताओं के सर का ताज नहीं बन पा रही है।

अष्टयोग- 4949

	3	2	4		6	5
3	30		24	2	30	
		3	4			2
5	35		37		29	
	1	5		6		7
	31		40	4	33	
1		4				3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4948 का हल

4	7	3	6	5	2	1
1	34	6	38	2	25	3
5	1	7	3	6	2	4
6	30	1	33	3	34	5
3	5	2	4	7	1	6
7	31	4	31	4	34	2
2	3	5	4	1	6	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

सत्ता की आलोचना

मोहन। ऐसा माना जाता है कि कवि, पत्रकार, सिनेमा के कलाकार सहित अनेक विधाओं के लोग सत्ता की आलोचना ही करते हैं। इसका कारण यह है कि इनके द्वारा सरकार की गलत नीतियों का विरोध किया जाता है। जरूरत पड़ने पर सरकार के अच्छे कदमों का स्वागत भी इनके द्वारा किया जाता है। समय समय पर सरकार के क्रिया कलापों का आंकलन वालीवुड के अदाकारों को करना चाहिए और अपनी राय सार्वजनिक करते हुए सरकारों को चेताया भी जाना चाहिए। विडम्बना ही कही जाएगी कि पिछले कुछ सालों से इस तरह की कवायद होने के बजाए या तो सरकार के धुर विरोधी या सरकार के पिछलग्गू की भूमिका में अदाकार दिख रहे हैं। वालीवुड ही नहीं, हालीवुड भी इस तरह की कवायद से अछूता नही है। अमेरिका को दुनिया का चौधरी माना जाता है। अमेरिका में चुनाव होने वाले हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप हालीवुड के अदाकारों के निशाने पर हैं। रॉबर्ट डि नोरो एवं मेरिल स्ट्रीप जैसे हालीवुड के सुपर स्टार्स के द्वारा डोनाल्ड ट्रंप पर जमकर निशाना साध रहे हैं।